

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

भारत-आसियान संबंध: वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभावनाएं – एक राजनीतिक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरूप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश

भारत और आसियान के संबंध समकालीन एशियाई राजनीति में भारत की विदेश नीति तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्रीय व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आयाम बन चुके हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारत-आसियान संबंधों के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान राजनीतिक एवं सामरिक स्थिति तथा भविष्य की संभावनाओं का राजनीतिक विश्लेषण करना है। अध्ययन में 1990 के दशक की 'पूर्व की ओर देखो नीति' से लेकर वर्ष 2014 के बाद 'पूर्व की ओर कार्य करो नीति' तथा वर्ष 2022 में स्थापित व्यापक रणनीतिक साझेदारी तक संबंधों के विकास का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत-आसियान संबंध राजनीतिक संवाद, व्यापार एवं निवेश, संपर्क-सुविधा, समुद्री सुरक्षा, रक्षा सहयोग तथा जन-से-जन संबंधों के क्षेत्रों में निरंतर विस्तृत हुए हैं। वर्ष 2024 में भारत-आसियान वस्तु व्यापार लगभग **106.93 अरब अमेरिकी डॉलर** रहा, जो आर्थिक संबंधों की बढ़ती महत्ता को दर्शाता है। तथापि व्यापार असंतुलन, संपर्क-सुविधा परियोजनाओं में विलंब, म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता तथा विभिन्न आसियान देशों की भिन्न रणनीतिक प्राथमिकताएँ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते आर्थिक एवं सामरिक प्रभाव, दक्षिण चीन सागर की जटिलता और प्रमुख शक्तियों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने भारत-आसियान संबंधों को नई रणनीतिक प्रासंगिकता प्रदान की है। इस संदर्भ में **आसियान की केंद्रीयता, रणनीतिक स्वायत्तता और नियम-आधारित क्षेत्रीय व्यवस्था** भारत एवं आसियान के साझा हितों के महत्वपूर्ण आधार हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि आर्थिक सहयोग, संपर्क-सुविधा, समुद्री सुरक्षा, डिजिटल एवं प्रौद्योगिकी सहयोग तथा पूर्वोत्तर भारत की सक्रिय भूमिका भविष्य में भारत-आसियान साझेदारी को अधिक प्रभावी बनाने वाले प्रमुख क्षेत्र होंगे। इस प्रकार भारत-आसियान संबंध एक ऐसी व्यापक रणनीतिक साझेदारी के रूप में विकसित हो सकते हैं, जो भारत के राष्ट्रीय हितों के साथ-साथ **शांतिपूर्ण, समावेशी, बहुधुवीय एवं स्थिर हिंद-प्रशांत क्षेत्र** के निर्माण में भी योगदान दे।

मुख्य शब्द: भारत-आसियान संबंध, पूर्व की ओर देखो नीति, पूर्व की ओर कार्य करो नीति, हिंद-प्रशांत, आसियान की केंद्रीयता, चीन, क्षेत्रीय सुरक्षा, सामरिक सहयोग, संपर्क-सुविधा।

प्रस्तावना

भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच संबंध केवल आधुनिक कूटनीतिक संपर्कों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे सदियों पुराने सभ्यतागत, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं व्यापारिक संबंधों की व्यापक पृष्ठभूमि विद्यमान है। भारतीय संस्कृति, बौद्ध धर्म, हिन्दू परंपराओं, भाषा, कला तथा समुद्री व्यापार ने दक्षिण-पूर्व एशिया के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को लंबे समय तक प्रभावित किया है। आधुनिक काल में इन ऐतिहासिक संपर्कों ने राजनीतिक एवं आर्थिक संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया है। वर्तमान समय में Association of Southeast

Asian Nations (ASEAN) दक्षिण-पूर्व एशिया की क्षेत्रीय राजनीति, आर्थिक एकीकरण और सुरक्षा व्यवस्था का प्रमुख संस्थागत केंद्र बन चुका है। ASEAN की स्थापना 8 अगस्त 1967 को इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड द्वारा की गई थी। अक्टूबर 2025 में तिमोर-लेस्ते के पूर्ण सदस्य बनने के बाद ASEAN के सदस्यों की संख्या 11 हो गई।

भारत के लिए दक्षिण-पूर्व एशिया का महत्व भौगोलिक निकटता से कहीं अधिक व्यापक है। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के मध्य स्थित यह क्षेत्र विश्व की महत्वपूर्ण समुद्री व्यापारिक एवं सामरिक गतिविधियों का केंद्र है। दक्षिण-पूर्व एशिया भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को व्यापक एशियाई अर्थव्यवस्था से जोड़ने वाला प्राकृतिक सेतु भी है। विशेष रूप से बंगाल की खाड़ी, मलक्का जलडमरूमध्य और दक्षिण चीन सागर से जुड़े समुद्री मार्ग भारत की आर्थिक एवं ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए ASEAN भारत की विदेश नीति में केवल एक क्षेत्रीय संगठन नहीं, बल्कि भारत के आर्थिक हितों, समुद्री सुरक्षा, पूर्वोत्तर क्षेत्र की कनेक्टिविटी और Indo-Pacific रणनीति का महत्वपूर्ण आधार बन चुका है।

भारत और ASEAN के ऐतिहासिक एवं सभ्यतागत संबंध

भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के संबंधों की जड़ें प्राचीन समुद्री व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में दिखाई देती हैं। भारतीय व्यापारियों, धार्मिक विद्वानों और सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से भारतीय सभ्यता के अनेक तत्व इंडोनेशिया, मलेशिया, कंबोडिया, वियतनाम, थाईलैंड तथा अन्य क्षेत्रों तक पहुँचे। विशेष रूप से बौद्ध धर्म और भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं ने दक्षिण-पूर्व एशिया के राजनीतिक एवं सामाजिक विकास पर प्रभाव डाला। आधुनिक राजनीतिक संदर्भ में भारत और ASEAN के औपचारिक संबंधों की शुरुआत 1990 के दशक में हुई। भारत ने 1992 में ASEAN के साथ **Sectoral Dialogue Partnership** स्थापित की और 1995 में उसे **Dialogue Partnership** के स्तर तक उन्नत किया। वर्ष 2002 में ASEAN-India Summit स्तर का संवाद प्रारंभ हुआ, जबकि 2012 में दोनों पक्षों ने अपने संबंधों को **Strategic Partnership** में परिवर्तित किया। इस प्रकार तीन दशकों से अधिक समय में भारत-ASEAN संबंध सीमित आर्थिक संपर्क से आगे बढ़कर राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामरिक एवं सुरक्षा सहयोग की व्यापक साझेदारी में विकसित हुए हैं।

भारत ने 2003 में **Treaty of Amity and Cooperation in Southeast Asia (TAC)** में प्रवेश किया, जिससे दक्षिण-पूर्व एशिया की क्षेत्रीय व्यवस्था के प्रति भारत की प्रतिबद्धता और अधिक स्पष्ट हुई। इसके बाद ASEAN Regional Forum (ARF), East Asia Summit (EAS) तथा ASEAN Defence Ministers' Meeting-Plus (ADMM-Plus) जैसे बहुपक्षीय तंत्रों में भारत की सक्रिय भागीदारी ने उसके संबंधों को राजनीतिक एवं सुरक्षा आयाम प्रदान किया।

दक्षिण-पूर्व एशिया का भारत की विदेश नीति में महत्व

1991 के आर्थिक सुधारों के बाद भारत की विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति तथा एशिया-प्रशांत क्षेत्र के साथ व्यापक संपर्क को विशेष महत्व मिला। इसी पृष्ठभूमि में 1990 के दशक की शुरुआत में भारत ने **Look East Policy** को अपनाया। इसका उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ आर्थिक संबंधों, व्यापार तथा राजनीतिक संपर्क को मजबूत करना था। समय के साथ यह नीति अधिक व्यापक एवं रणनीतिक स्वरूप ग्रहण करती गई। वर्ष 2014 में

भारत ने **Act East Policy** को औपचारिक रूप से आगे बढ़ाया। इस नीति ने Look East Policy की तुलना में अधिक सक्रिय, रणनीतिक एवं परिणामोन्मुख दृष्टिकोण अपनाया। भारत सरकार के अनुसार Act East Policy का केंद्र ASEAN है और इसके प्रमुख उद्देश्यों में आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक संबंध, रणनीतिक साझेदारी तथा राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और people-to-people connectivity को बढ़ाना शामिल है। इस परिवर्तन से स्पष्ट होता है कि भारत की पूर्वोन्मुखी नीति अब केवल व्यापार एवं निवेश तक सीमित नहीं है। इसमें **रक्षा सहयोग, समुद्री सुरक्षा, डिजिटल कनेक्टिविटी, अवसंरचना, आतंकवाद-रोधी सहयोग, आपदा प्रबंधन तथा Indo-Pacific में क्षेत्रीय स्थिरता** जैसे मुद्दे भी सम्मिलित हो चुके हैं।

भारत-ASEAN संबंधों के आर्थिक आयाम की बढ़ती महत्ता को उपलब्ध आँकड़ों से भी समझा जा सकता है। ASEAN के आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार वर्ष **2024 में ASEAN और भारत के बीच द्विपक्षीय वस्तु व्यापार 106.83 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया।** इसी वर्ष ASEAN में भारत से FDI प्रवाह लगभग **3.5 अरब अमेरिकी डॉलर** रहा। इस व्यापारिक स्तर ने भारत को ASEAN का आठवाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बनाया।

इस प्रकार आर्थिक संबंधों में उल्लेखनीय विस्तार के बावजूद व्यापार संतुलन, बाजार पहुँच और गैर-शुल्क बाधाएँ भारत-ASEAN आर्थिक साझेदारी के समक्ष महत्वपूर्ण प्रश्न बने हुए हैं। यही कारण है कि ASEAN-India Trade in Goods Agreement (AITIGA) की समीक्षा को दोनों पक्षों ने प्राथमिकता दी है।

Indo-Pacific में भारत और ASEAN की बढ़ती प्रासंगिकता

21वीं सदी के दूसरे दशक में Indo-Pacific क्षेत्र वैश्विक राजनीति के सबसे महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक क्षेत्रों में उभरकर सामने आया है। हिंद महासागर से पश्चिमी प्रशांत तक विस्तृत यह क्षेत्र विश्व व्यापार, ऊर्जा परिवहन, समुद्री संचार और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का महत्वपूर्ण केंद्र है। इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती आर्थिक एवं सामरिक सक्रियता, दक्षिण चीन सागर से जुड़े विवाद और अमेरिका-चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धा ने क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन को जटिल बनाया है।

ऐसी स्थिति में ASEAN की **Centrality** भारत की Indo-Pacific नीति का महत्वपूर्ण तत्व है। भारत ASEAN को क्षेत्रीय संस्थागत व्यवस्था के केंद्र में रखता है और ASEAN-led mechanisms के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाने का समर्थन करता है। भारत का Indo-Pacific दृष्टिकोण तथा ASEAN का **ASEAN Outlook on the Indo-Pacific (AOIP)** दोनों ही समावेशी, खुले, नियम-आधारित एवं बहुपक्षीय क्षेत्रीय ढाँचे पर बल देते हैं। दिसंबर 2025 तक भारत-ASEAN संबंधों का आर्थिक आधार भी पर्याप्त रूप से मजबूत हो चुका था। जून 2025 में विदेश मंत्रालय के अनुसार भारत-ASEAN व्यापार लगभग **125 अरब अमेरिकी डॉलर** के स्तर पर था तथा दोनों दिशाओं में निवेश बढ़ रहा था। भारत की ASEAN के आठ सदस्य देशों के साथ सीधी हवाई कनेक्टिविटी भी थी, जो people-to-people तथा आर्थिक संपर्क की बढ़ती प्रकृति को दर्शाती है।

इसी संदर्भ में भारत-ASEAN संबंधों को केवल द्विपक्षीय आर्थिक साझेदारी के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। यह संबंध अब **क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा, कनेक्टिविटी और Indo-Pacific की संस्थागत राजनीति** से सीधे जुड़े हुए हैं। चीन की बढ़ती क्षेत्रीय उपस्थिति के बीच भारत और ASEAN दोनों के लिए एक ऐसी क्षेत्रीय व्यवस्था महत्वपूर्ण है जिसमें किसी एक शक्ति का प्रभुत्व न हो तथा क्षेत्रीय देशों की रणनीतिक स्वायत्तता एवं ASEAN Centrality सुरक्षित रहे।

अतः वर्तमान भारत-ASEAN संबंधों का अध्ययन भारतीय विदेश नीति, क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन और Indo-Pacific की बदलती भू-राजनीति को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। वर्ष 2025 तक की स्थिति यह संकेत देती है कि भारत-ASEAN साझेदारी का अगला चरण केवल व्यापार वृद्धि पर निर्भर नहीं होगा, बल्कि कनेक्टिविटी, समुद्री सुरक्षा, रक्षा सहयोग, डिजिटल अर्थव्यवस्था, आपूर्ति-श्रृंखला, तकनीकी सहयोग तथा साझा क्षेत्रीय सुरक्षा हितों पर भी आधारित होगा। यही संदर्भ इस शोध-पत्र में भारत-ASEAN संबंधों की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं के राजनीतिक विश्लेषण को आवश्यक बनाता है।

प्रमुख तथ्य (दिसंबर 2025 तक)

क्र.सं.	तथ्य	स्थिति
1.	ASEAN की स्थापना	8 अगस्त 1967
2.	भारत की ASEAN से Sectoral Dialogue Partnership	1992
3.	भारत की Dialogue Partnership	1995
4.	ASEAN-India Summit स्तर का संवाद	2002
5.	Strategic Partnership	2012
6.	Act East Policy	2014
7.	2024 ASEAN-India द्विपक्षीय वस्तु व्यापार	US\$106.83 अरब
8.	2024 में ASEAN में भारत से FDI	लगभग US\$3.5 अरब
9.	2025 में भारत-ASEAN व्यापार का स्तर	लगभग US\$125 अरब
10.	ASEAN की सदस्यता (अक्टूबर 2025 के बाद)	11 सदस्य

नोट: 2025 के व्यापार के लिए उपलब्ध आधिकारिक भारतीय स्रोत में लगभग US\$125 अरब का समकालीन स्तर दिया गया है, जबकि ASEAN का पूर्ण वार्षिक merchandise-trade आँकड़ा 2024 के लिए US\$106.83 अरब है।

शोध समस्या

भारत और आसियान के संबंध पिछले तीन दशकों में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामरिक स्तर पर निरंतर मजबूत हुए हैं। 'लुक ईस्ट नीति' से 'एक्ट ईस्ट नीति' की ओर परिवर्तन के बाद आसियान भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है। इसके बावजूद व्यापार असंतुलन, बाजार तक पहुँच, गैर-शुल्क बाधाएँ, संपर्क परियोजनाओं में विलंब तथा क्षेत्रीय सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव, दक्षिण चीन सागर विवाद और बदलते शक्ति-संतुलन ने भारत-आसियान संबंधों को और अधिक रणनीतिक बना दिया है। अतः इस अध्ययन की प्रमुख समस्या यह है कि आर्थिक, संपर्क एवं सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ भारत-आसियान साझेदारी की प्रभावशीलता को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं तथा भविष्य में इन संबंधों को किस दिशा में विकसित किया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता

भारत-आसियान संबंधों का अध्ययन वर्तमान क्षेत्रीय एवं वैश्विक राजनीतिक परिस्थितियों में महत्वपूर्ण है। इसके प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं—

प्रथम, दक्षिण-पूर्व एशिया भारत की समुद्री एवं सामरिक सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

द्वितीय, 'एक्ट ईस्ट नीति' की वास्तविक प्रभावशीलता का मूल्यांकन व्यापार, निवेश, संपर्क, रक्षा एवं राजनीतिक सहयोग के आधार पर आवश्यक है।

तृतीय, हिंद-प्रशांत में चीन के बढ़ते प्रभाव और बदलते शक्ति-संतुलन के संदर्भ में भारत-आसियान सहयोग का अध्ययन आवश्यक है।

चतुर्थ, आसियान के माध्यम से पूर्वोत्तर भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया के व्यापार एवं परिवहन नेटवर्क से जोड़ने की महत्वपूर्ण संभावनाएँ हैं।

पंचम, व्यापार असंतुलन, संपर्क परियोजनाओं में विलंब और अन्य आर्थिक चुनौतियों के समाधान के लिए वर्तमान संबंधों का नीतिगत मूल्यांकन आवश्यक है।

अतः यह अध्ययन भारत-आसियान संबंधों को विदेश नीति, क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, हिंद-प्रशांत, समुद्री सुरक्षा और आर्थिक सहयोग के व्यापक संदर्भ में समझने तथा भविष्य के लिए प्रभावी रणनीतियों की पहचान करने में सहायक होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत-ASEAN संबंधों के ऐतिहासिक विकास एवं वर्तमान राजनीतिक स्थिति का विश्लेषण करना।
2. Indo-Pacific, चीन के बढ़ते प्रभाव एवं क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन के संदर्भ में भारत-ASEAN सामरिक संबंधों का अध्ययन करना।
3. भारत-ASEAN संबंधों की प्रमुख चुनौतियों एवं भविष्य की संभावनाओं का मूल्यांकन करते हुए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न

1. वर्तमान समय में भारत-ASEAN संबंधों की प्रमुख राजनीतिक एवं सामरिक विशेषताएँ क्या हैं?
2. Indo-Pacific और चीन का बढ़ता प्रभाव भारत-ASEAN संबंधों को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है?
3. भारत-ASEAN संबंधों को भविष्य में अधिक प्रभावी बनाने के लिए किन क्षेत्रों पर ध्यान देना आवश्यक है?

परिकल्पनाएँ

1. भारत की Act East Policy ने ASEAN के साथ भारत के राजनीतिक एवं सामरिक संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. Indo-Pacific में चीन के बढ़ते प्रभाव ने भारत और ASEAN के बीच सामरिक एवं समुद्री सुरक्षा सहयोग की आवश्यकता को बढ़ाया है।
3. कनेक्टिविटी, आर्थिक सहयोग एवं समुद्री सुरक्षा भारत-ASEAN संबंधों के भविष्य के प्रमुख आधार होंगे।

सैद्धांतिक आधार

भारत-आसियान संबंधों का राजनीतिक अध्ययन केवल घटनाओं एवं नीतिगत निर्णयों के वर्णन तक सीमित न रहकर उपयुक्त राजनीतिक सिद्धांतों के आधार पर किया जाना आवश्यक है। इस शोध-पत्र में भारत-आसियान संबंधों की प्रकृति, क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, संस्थागत सहयोग तथा सुरक्षा संबंधी चुनौतियों को समझने के लिए निम्नलिखित सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का प्रयोग किया जाएगा -

1. यथार्थवादी सिद्धांत - यथार्थवादी दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय राजनीति में **राष्ट्रीय हित, शक्ति, सुरक्षा और शक्ति-संतुलन** को प्रमुख महत्व देता है। भारत-आसियान संबंधों के संदर्भ में इस सिद्धांत के माध्यम से यह विश्लेषण किया जाएगा कि भारत अपने राष्ट्रीय एवं सामरिक हितों की पूर्ति के लिए आसियान के साथ संबंधों को किस प्रकार विकसित कर रहा है। साथ ही, दक्षिण-पूर्व एशिया में चीन के बढ़ते आर्थिक एवं सामरिक प्रभाव तथा भारत की क्षेत्रीय भूमिका को भी शक्ति-संतुलन के संदर्भ में समझा जाएगा।

2. उदार संस्थागतवादी सिद्धांत - उदार संस्थागतवाद अंतरराष्ट्रीय सहयोग, संवाद, परस्पर निर्भरता तथा क्षेत्रीय संस्थाओं की भूमिका पर बल देता है। इस दृष्टिकोण के आधार पर भारत और आसियान के बीच **संस्थागत संवाद, व्यापार, आर्थिक सहयोग, बहुपक्षीय मंचों, समुद्री सुरक्षा तथा क्षेत्रीय सहयोग** का अध्ययन किया जाएगा। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि संस्थागत तंत्र किस प्रकार भारत और आसियान के बीच सहयोग को मजबूत करते हैं।

3. क्षेत्रीय सुरक्षा परिसर दृष्टिकोण - क्षेत्रीय सुरक्षा परिसर दृष्टिकोण के अनुसार किसी क्षेत्र के देशों की सुरक्षा एक-दूसरे से परस्पर जुड़ी होती है। भारत-आसियान संबंधों के संदर्भ में दक्षिण-पूर्व एशिया और हिंद-प्रशांत की **समुद्री सुरक्षा, दक्षिण चीन सागर विवाद, चीन का बढ़ता प्रभाव, आतंकवाद, समुद्री अपराध तथा क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन** जैसी चुनौतियों का अध्ययन इस दृष्टिकोण से किया जाएगा।

सैद्धांतिक आधार का समग्र महत्व

इन तीनों दृष्टिकोणों के संयुक्त प्रयोग से भारत-आसियान संबंधों का **शक्ति, राष्ट्रीय हित, संस्थागत सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा** के व्यापक संदर्भ में राजनीतिक विश्लेषण संभव होगा। इससे शोध-पत्र केवल वर्णनात्मक अध्ययन न रहकर भारत-आसियान संबंधों की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभावनाओं का व्यवस्थित राजनीतिक विश्लेषण प्रस्तुत कर सकेगा।

साहित्य पुनरावलोकन

भारत-आसियान संबंधों पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि इस विषय को विभिन्न विद्वानों ने ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामरिक तथा हिंद-प्रशांत के व्यापक संदर्भ में अलग-अलग दृष्टिकोणों

से समझने का प्रयास किया है। उपलब्ध साहित्य को मुख्यतः चार प्रमुख आयामों—ऐतिहासिक एवं नीतिगत विकास, आर्थिक संबंध, सामरिक एवं सुरक्षा सहयोग तथा हिंद-प्रशांत की भू-राजनीति—में विभाजित किया जा सकता है। भारत की दक्षिण-पूर्व एशिया नीति के विकास पर अध्ययन करते हुए **Saint-Mezard (2016)** ने तर्क दिया कि 1990 के दशक में प्रारंभ हुई 'लुक ईस्ट नीति' भारत की विदेश नीति की महत्वपूर्ण पहल थी। उनके अनुसार भारत की दक्षिण-पूर्व एशिया में बढ़ती सक्रियता के पीछे व्यक्तिगत नेतृत्व, क्षेत्रीय परिस्थितियों और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था—तीनों स्तरों की भूमिका रही। हालांकि, उन्होंने यह भी संकेत किया कि भारत की बढ़ती क्षमता के बावजूद दक्षिण-पूर्व एशिया में उसकी भूमिका और रणनीतिक दिशा को लेकर कुछ अस्पष्टताएँ बनी रहीं। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे 'लुक ईस्ट' से 'एक्ट ईस्ट' तक हुए परिवर्तन का मूल्यांकन करने का आधार प्राप्त होता है।

Palit (2016) ने भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' का विश्लेषण करते हुए इसे 'लुक ईस्ट नीति' की तुलना में अधिक सक्रिय एवं रणनीतिक स्वरूप वाला बताया। उनके अध्ययन के अनुसार एक्ट ईस्ट नीति का महत्व केवल आर्थिक संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका संबंध भारत की क्षेत्रीय रणनीतिक उपस्थिति और दक्षिण-पूर्व एशिया में बढ़ती भूमिका से भी है। इस अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि भारत-आसियान संबंधों का स्वरूप आर्थिक संपर्क से आगे बढ़कर राजनीतिक एवं सामरिक साझेदारी की दिशा में क्यों विकसित हुआ।

Sundararaman (2017) ने भारत-आसियान संबंधों का अध्ययन हिंद-प्रशांत की उभरती अवधारणा के संदर्भ में किया। उनके अनुसार 'लुक ईस्ट' और 'एक्ट ईस्ट' नीतियाँ भारत की पूर्वोन्मुखी विदेश नीति के प्रमुख आधार हैं और आसियान इन दोनों नीतियों के केंद्र में स्थित है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि हिंद-प्रशांत की अवधारणा के उभरने के साथ भारत-आसियान संबंधों का सामरिक महत्व बढ़ा है।

Ngaibakching और Pande (2020) ने 'एक्ट ईस्ट नीति' और आसियान के बीच संबंधों को हिंद-प्रशांत में क्षेत्रीय व्यवस्था के निर्माण के संदर्भ में देखा। उनके अध्ययन के अनुसार चीन की बढ़ती सक्रियता, बेल्ट एंड रोड पहल तथा हिंद-प्रशांत की उभरती भू-राजनीति ने भारत की एक्ट ईस्ट नीति को नया रणनीतिक संदर्भ प्रदान किया। उन्होंने भारत और आसियान को एक ऐसी क्षेत्रीय व्यवस्था के संभावित साझेदार के रूप में देखा जो पारदर्शिता, संप्रभुता, अंतरराष्ट्रीय कानून तथा नियम-आधारित व्यवस्था पर आधारित हो।

भारत-आसियान आर्थिक संबंधों पर **Banik और Kim (2020)** का अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारत-आसियान व्यापार के स्वरूप और तुलनात्मक लाभ का विश्लेषण करते हुए पाया कि भारत के कुछ प्रमुख निर्यात उत्पाद आसियान बाजारों में पर्याप्त प्रतिस्पर्धी नहीं हैं। उनके अनुसार घरेलू नीतिगत बाधाएँ और गैर-शुल्क बाधाएँ आर्थिक एकीकरण की गति को प्रभावित करती हैं। यह अध्ययन वर्तमान शोध में भारत-आसियान व्यापार असंतुलन और आर्थिक सहयोग की सीमाओं को समझने के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

Ghosh (2024) ने भारत-आसियान आर्थिक संबंधों को विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत के संदर्भ में देखा। अध्ययन के अनुसार पिछले तीन दशकों में भारत-आसियान आर्थिक संबंधों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, लेकिन पूर्वोत्तर भारत में इसका अपेक्षित आर्थिक प्रभाव सीमित रहा है। कमजोर अवसंरचना और संपर्क-सुविधाओं की कमी को इसका प्रमुख कारण माना गया है। यह निष्कर्ष वर्तमान शोध में भारत-म्यांमार-थाईलैंड संपर्क, पूर्वोत्तर भारत और एक्ट ईस्ट नीति के व्यावहारिक परिणामों के विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत-आसियान संबंधों के मानक एवं वैचारिक पक्ष का अध्ययन Ogden (2023) ने किया है। उन्होंने तर्क दिया कि भारत और आसियान के बीच समान राजनीतिक सिद्धांतों, ऐतिहासिक अनुभवों और मानदंडों ने संबंधों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका अध्ययन यह संकेत देता है कि भारत-आसियान संबंधों को केवल भौतिक शक्ति, व्यापार या सामरिक प्रतिस्पर्धा के आधार पर नहीं समझा जा सकता; इतिहास, पहचान और साझा मानदंड भी इन संबंधों की संरचना को प्रभावित करते हैं।

भारत और चीन की दक्षिण-पूर्व एशिया में बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मक भूमिका पर B. (2025) का अध्ययन विशेष रूप से प्रासंगिक है। इसमें भारत और चीन की क्षेत्रीय राज्य-कौशल की तुलना करते हुए यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि दोनों शक्तियाँ दक्षिण-पूर्व एशिया की क्षेत्रीय संस्थाओं, आर्थिक संबंधों और राजनीतिक प्रभाव को अपने-अपने रणनीतिक हितों के अनुरूप प्रभावित करने का प्रयास करती हैं। इससे वर्तमान शोध में चीन के प्रभाव को केवल सुरक्षा चुनौतियों के रूप में देखने के बजाय भारत-चीन क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा के व्यापक राजनीतिक संदर्भ में समझने की आवश्यकता स्पष्ट होती है। उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से निम्न प्रमुख प्रवृत्तियाँ सामने आती हैं—

1. भारत-आसियान संबंधों का विकास 'लुक ईस्ट' से 'एक्ट ईस्ट' और आगे व्यापक रणनीतिक साझेदारी की दिशा में हुआ है।
2. आसियान भारत की पूर्वोन्मुखी विदेश नीति तथा हिंद-प्रशांत रणनीति का केंद्रीय तत्व बन चुका है।
3. भारत-आसियान आर्थिक संबंधों में वृद्धि के बावजूद व्यापार असंतुलन, बाजार पहुँच और गैर-शुल्क बाधाएँ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं।
4. संपर्क-सुविधा और पूर्वोत्तर भारत की भूमिका भारत-आसियान संबंधों की आर्थिक क्षमता को वास्तविक परिणामों में बदलने के लिए महत्वपूर्ण है।
5. चीन की बढ़ती आर्थिक एवं सामरिक उपस्थिति ने भारत-आसियान संबंधों को अतिरिक्त रणनीतिक महत्व प्रदान किया है।
6. भारत और आसियान के बीच समुद्री सुरक्षा एवं क्षेत्रीय स्थिरता के क्षेत्र में रणनीतिक अभिसरण बढ़ा है।
7. उपलब्ध साहित्य में भारत-आसियान संबंधों को केवल शक्ति-संतुलन के दृष्टिकोण से देखने के बजाय संस्थागत सहयोग, साझा मानदंड और रणनीतिक स्वायत्तता के दृष्टिकोण से भी समझने की आवश्यकता सामने आती है।

शोध-अंतर (Research Gap)

उपलब्ध साहित्य भारत-आसियान संबंधों के विभिन्न पक्षों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, किंतु अधिकांश अध्ययन किसी एक विशिष्ट आयाम—जैसे 'एक्ट ईस्ट नीति', व्यापार, पूर्वोत्तर भारत, हिंद-प्रशांत या चीन—पर अधिक केंद्रित दिखाई देते हैं। इन अध्ययनों में भारत-आसियान संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान राजनीतिक स्थिति, आर्थिक संबंध, समुद्री सुरक्षा, चीन के प्रभाव, हिंद-प्रशांत की राजनीति और भविष्य की संभावनाओं को एकीकृत राजनीतिक विश्लेषण के रूप में देखने की गुंजाइश बनी हुई है। विशेष रूप से दिसंबर 2025 तक भारत-आसियान संबंधों में हुए संस्थागत विकास, व्यापक रणनीतिक साझेदारी, बदलती हिंद-प्रशांत भू-राजनीति तथा भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को एक साथ रखकर विश्लेषित करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध इसी शोध-अंतर को संबोधित करने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य भारत-आसियान संबंधों को केवल द्विपक्षीय संबंध के रूप में नहीं, बल्कि क्षेत्रीय

शक्ति-संतुलन, संस्थागत सहयोग, समुद्री सुरक्षा और हिंद-प्रशांत की बदलती राजनीतिक व्यवस्था के व्यापक संदर्भ में समझना है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें भारत-आसियान संबंधों के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान राजनीतिक एवं सामरिक स्थिति तथा भविष्य की संभावनाओं का व्यवस्थित अध्ययन किया जाएगा। शोध में आवश्यकतानुसार गुणात्मक तथ्यों के साथ व्यापार, निवेश एवं अन्य प्रासंगिक आँकड़ों का भी उपयोग किया जाएगा, ताकि निष्कर्ष अधिक वस्तुनिष्ठ एवं तथ्यपरक हो सकें।

1. आँकड़ों एवं सामग्री के स्रोत

शोध के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है - -

- **प्राथमिक स्रोतों** में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के आधिकारिक दस्तावेज, भारत-आसियान संयुक्त घोषणाएँ, शिखर सम्मेलन के दस्तावेज तथा आसियान सचिवालय द्वारा प्रकाशित आधिकारिक सामग्री को शामिल किया जाएगा।
- **द्वितीयक स्रोतों** में संबंधित विषय की शोध-पुस्तकें, शोध-पत्र, प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध-पत्रिकाएँ तथा विभिन्न सरकारी एवं संस्थागत रिपोर्टों का उपयोग किया जाएगा।

2. विश्लेषण की विधियाँ

शोध में निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाएगा—

- **ऐतिहासिक विश्लेषण:** भारत-आसियान संबंधों के विकास एवं विभिन्न चरणों का अध्ययन।
- **तुलनात्मक विश्लेषण:** भारत की पूर्वोन्मुखी नीतियों तथा क्षेत्रीय शक्तियों की नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
- **विषय-वस्तु विश्लेषण:** आधिकारिक दस्तावेजों, नीतिगत वक्तव्यों, संयुक्त घोषणाओं एवं शोध-साहित्य में प्रस्तुत प्रमुख विषयों और प्रवृत्तियों का विश्लेषण।
- **राजनीतिक-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण:** राष्ट्रीय हित, शक्ति-संतुलन, क्षेत्रीय सुरक्षा एवं संस्थागत सहयोग के आधार पर भारत-आसियान संबंधों का मूल्यांकन।

इस प्रकार शोध पद्धति का उद्देश्य उपलब्ध तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर भारत-आसियान संबंधों की वर्तमान स्थिति, प्रमुख चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का वस्तुनिष्ठ और तार्किक राजनीतिक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

भारत-आसियान संबंधों का ऐतिहासिक विकास

भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के संबंध आधुनिक कूटनीतिक व्यवस्था से बहुत पहले से अस्तित्व में रहे हैं। प्राचीन काल से ही समुद्री व्यापार, बौद्ध धर्म, हिन्दू सांस्कृतिक परंपराओं, कला, स्थापत्य तथा ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के समाजों के बीच घनिष्ठ संपर्क विकसित हुआ। कंबोडिया के अंगकोरवाट, इंडोनेशिया के बाली तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव इसके ऐतिहासिक प्रमाण

प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार भारत-आसियान संबंधों की वर्तमान राजनीतिक संरचना के पीछे एक दीर्घकालीन सभ्यतागत आधार मौजूद रहा है।

1. आसियान की स्थापना और भारत की प्रारंभिक नीति

आधुनिक संस्थागत संदर्भ में दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के बीच क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 8 अगस्त 1967 को बैंकॉक घोषणा के माध्यम से आसियान की स्थापना हुई। इसके संस्थापक सदस्य इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड थे। आसियान का मूल उद्देश्य क्षेत्र में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति तथा राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देना था।

शीत युद्ध के दौर में भारत और आसियान के संबंध अपेक्षाकृत सीमित रहे। भारत की विदेश नीति का प्रमुख आधार गुटनिरपेक्षता, विकासशील देशों के साथ सहयोग तथा औपनिवेशिक विरासत से मुक्त स्वतंत्र विदेश नीति था। दूसरी ओर, दक्षिण-पूर्व एशिया में शीत युद्ध की शक्ति-राजनीति और सुरक्षा संबंधी परिस्थितियों ने भी भारत-आसियान संबंधों के विस्तार को सीमित रखा।

हालाँकि, भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों के साथ द्विपक्षीय राजनीतिक संबंध स्वतंत्रता के बाद शीघ्र स्थापित हो गए। उदाहरण के लिए, भारत ने इंडोनेशिया के साथ 1951, मलेशिया के साथ 1957, म्यांमार के साथ 1948 और कंबोडिया के साथ 1952 में राजनयिक संबंध स्थापित किए।

2. 1991 के बाद 'लुक ईस्ट नीति' और संबंधों में परिवर्तन

1991 में सोवियत संघ के विघटन, शीत युद्ध की समाप्ति और भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक सुधारों के प्रारंभ ने भारत की विदेश नीति के सामने नई परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं। इसी परिवर्तित अंतरराष्ट्रीय वातावरण में भारत ने 1990 के दशक के प्रारंभ में 'लुक ईस्ट नीति' को अपनाया। इसका उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया और व्यापक एशिया-प्रशांत क्षेत्र के साथ आर्थिक, राजनीतिक एवं रणनीतिक संबंधों को मजबूत करना था।

'लुक ईस्ट नीति' भारत की विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन थी, क्योंकि इसके माध्यम से भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया को केवल सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संपर्क के क्षेत्र के रूप में न देखकर आर्थिक विकास और क्षेत्रीय कूटनीति के महत्वपूर्ण भाग के रूप में देखना शुरू किया। इसी नीति के परिणामस्वरूप वर्ष 1992 में भारत आसियान का क्षेत्रीय संवाद साझेदार बना। वर्ष 1995 में भारत को पूर्ण संवाद साझेदार का दर्जा प्राप्त हुआ और वर्ष 2002 में पहली भारत-आसियान शिखर बैठक आयोजित हुई।

इस प्रकार लगभग एक दशक के भीतर भारत-आसियान संबंध क्षेत्रीय संवाद से शिखर सम्मेलन स्तर की साझेदारी तक पहुँच गए। यह परिवर्तन इस बात का संकेत था कि दक्षिण-पूर्व एशिया भारत की विदेश नीति में तेजी से महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रहा था।

3. संवाद साझेदारी से संस्थागत सहयोग की ओर

भारत के संवाद साझेदार बनने के बाद भारत-आसियान संबंध केवल राजनीतिक वार्ताओं तक सीमित नहीं रहे, बल्कि अनेक संस्थागत तंत्रों के माध्यम से विस्तृत हुए। वर्ष 2002 से भारत-आसियान शिखर सम्मेलन नियमित रूप से आयोजित होने लगा। इसके साथ ही विदेश, वाणिज्य, पर्यटन, कृषि, पर्यावरण, नवीकरणीय ऊर्जा और दूरसंचार आदि क्षेत्रों में मंत्रीस्तरीय संवाद विकसित हुए। 2015 तक भारत और आसियान के बीच लगभग 30 संवाद तंत्र स्थापित हो चुके थे। वर्ष 2003 भारत-आसियान संबंधों के राजनीतिक विकास में विशेष महत्व रखता है। भारत ने 8 अक्टूबर 2003 को दक्षिण-पूर्व एशिया में मैत्री एवं सहयोग की संधि में प्रवेश किया। इसी अवसर पर भारत और आसियान ने अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद से निपटने के लिए संयुक्त घोषणा भी की। इससे भारत की दक्षिण-पूर्व एशिया की शांति, सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता स्पष्ट हुई।

वर्ष 2004 में दोनों पक्षों ने 'शांति, प्रगति और साझा समृद्धि के लिए भारत-आसियान साझेदारी' से संबंधित समझौते पर हस्ताक्षर किए। इसके बाद 2010-2015, 2016-2020 और 2021-2025 के लिए कार्य योजनाएँ विकसित की गईं, जिनसे सहयोग को अधिक संस्थागत एवं कार्यान्वयन-आधारित स्वरूप मिला।

4. रणनीतिक साझेदारी की ओर विकास

भारत-आसियान संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव दिसंबर 2012 में आया। नई दिल्ली में आयोजित भारत-आसियान स्मारक शिखर सम्मेलन में दोनों पक्षों ने संबंधों को 'रणनीतिक साझेदारी' के स्तर तक उन्नत किया। यह निर्णय भारत-आसियान संबंधों के 20 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिया गया था। रणनीतिक साझेदारी के बाद सहयोग का दायरा व्यापार और निवेश से आगे बढ़कर राजनीतिक-सुरक्षा सहयोग, समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी सहयोग, संपर्क-सुविधा, ऊर्जा सुरक्षा तथा क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय सहयोग तक विस्तृत हुआ। इस चरण में भारत ने आसियान को पूर्वी एशिया की क्षेत्रीय संस्थागत व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण साझेदार के रूप में देखना प्रारंभ किया।

5. 'लुक ईस्ट' से 'एक्ट ईस्ट नीति' तक

वर्ष 2014 में 'एक्ट ईस्ट नीति' की घोषणा भारत-आसियान संबंधों के विकास में एक नए चरण का प्रतिनिधित्व करती है। यदि 'लुक ईस्ट नीति' का मुख्य जोर दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ संपर्क एवं आर्थिक संबंधों को बढ़ाने पर था, तो 'एक्ट ईस्ट नीति' ने इस संबंध को अधिक सक्रिय, रणनीतिक और बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया। भारत सरकार के अनुसार 'एक्ट ईस्ट नीति' का केंद्र आसियान है और इसके प्रमुख उद्देश्यों में आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक संबंध तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ रणनीतिक संबंध विकसित करना शामिल है। इसमें राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और जन-से-जन संपर्क को व्यापक अर्थ में बढ़ाने पर बल दिया गया है।

इस नीति के अंतर्गत भारत ने संपर्क-सुविधा, व्यापार, समुद्री सहयोग, रक्षा संबंध तथा सांस्कृतिक संपर्क को अधिक महत्व दिया। भारत सरकार ने भी स्पष्ट किया है कि 'एक्ट ईस्ट नीति' ने भारत-आसियान संबंधों को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की है।

6. व्यापक रणनीतिक साझेदारी

भारत-आसियान संबंधों का नवीनतम महत्वपूर्ण संस्थागत पड़ाव 2022 में सामने आया। भारत और आसियान के बीच संवाद साझेदारी के 30 वर्ष पूरे होने पर 2022 को **भारत-आसियान मैत्री वर्ष** के रूप में मनाया गया। इसी वर्ष दोनों पक्षों ने भारत-आसियान संबंधों को 'व्यापक रणनीतिक साझेदारी' के स्तर तक उन्नत करने की घोषणा की।

व्यापक रणनीतिक साझेदारी ने सहयोग को अधिक व्यापक राजनीतिक एवं सामरिक आधार प्रदान किया। अब संबंधों में आर्थिक सहयोग के साथ-साथ **हिंद-प्रशांत, समुद्री सुरक्षा, डिजिटल अर्थव्यवस्था, संपर्क-सुविधा, स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा क्षेत्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों** पर सहयोग को भी महत्व दिया जा रहा है। 2025 में भारत सरकार ने भी यह स्पष्ट किया कि भारत व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है तथा **आसियान की एकता और केंद्रीयता** का समर्थन करता है। साथ ही भारत की हिंद-प्रशांत महासागर पहल और आसियान के हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण के बीच समानता को क्षेत्रीय सहयोग के लिए महत्वपूर्ण माना गया है।

ऐतिहासिक विकास का संक्षिप्त क्रम

क्र.सं.	वर्ष	प्रमुख घटनाक्रम	राजनीतिक महत्व
1.	1967	आसियान की स्थापना	दक्षिण-पूर्व एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की संस्थागत शुरुआत
2.	1991	भारत की 'लुक ईस्ट नीति' का प्रारंभिक चरण	विदेश नीति में दक्षिण-पूर्व एशिया का बढ़ता महत्व
3.	1992	भारत आसियान का क्षेत्रीय संवाद साझेदार बना	औपचारिक भारत-आसियान संबंधों की नई शुरुआत
4.	1995	भारत पूर्ण संवाद साझेदार बना	संस्थागत संबंधों का विस्तार
5.	2002	प्रथम भारत-आसियान शिखर सम्मेलन	उच्चस्तरीय राजनीतिक संवाद की शुरुआत
6.	2003	भारत ने मैत्री एवं सहयोग की संधि स्वीकार की	क्षेत्रीय शांति एवं सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता
7.	2004	शांति, प्रगति एवं साझा समृद्धि के लिए साझेदारी	सहयोग का संस्थागत विस्तार
8.	2012	रणनीतिक साझेदारी	संबंधों का राजनीतिक एवं सामरिक उन्नयन
9.	2014	'एक्ट ईस्ट नीति'	संबंधों को सक्रिय एवं रणनीतिक दिशा
10.	2022	व्यापक रणनीतिक साझेदारी	संबंधों का व्यापक राजनीतिक-सामरिक उन्नयन
11.	2025	व्यापक रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने पर जोर	हिंद-प्रशांत एवं क्षेत्रीय सहयोग में नई प्राथमिकताएँ

इस ऐतिहासिक विकास से स्पष्ट है कि भारत-आसियान संबंधों ने **सभ्यतागत संपर्क से आधुनिक कूटनीतिक संबंध, संवाद साझेदारी से शिखर सम्मेलन, रणनीतिक साझेदारी से व्यापक रणनीतिक साझेदारी** तक एक क्रमिक विकास यात्रा पूरी की है। 1990 के दशक में जहाँ संबंधों का प्रमुख आधार आर्थिक एवं राजनीतिक संपर्क था, वहीं

2025 तक यह साझेदारी क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, समुद्री सुरक्षा, हिंद-प्रशांत व्यवस्था, संपर्क-सुविधा और आर्थिक सुरक्षा जैसे व्यापक रणनीतिक प्रश्नों से जुड़ चुकी है।

इसलिए भारत-आसियान संबंधों का ऐतिहासिक विकास केवल अतीत की घटनाओं का क्रम नहीं है, बल्कि यह भारत की विदेश नीति में हुए उस परिवर्तन को भी दर्शाता है जिसमें दक्षिण-पूर्व एशिया को भारत के राष्ट्रीय हित, क्षेत्रीय सुरक्षा और हिंद-प्रशांत रणनीति के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में स्वीकार किया गया है।

भारत-आसियान संबंधों की वर्तमान स्थिति

भारत और आसियान के संबंध वर्तमान समय में व्यापक रणनीतिक साझेदारी के चरण में हैं। वर्ष 2022 में संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी का दर्जा मिलने के बाद राजनीतिक, आर्थिक, सामरिक, डिजिटल तथा समुद्री सहयोग को नई दिशा मिली है। वर्ष 2025 में भारत ने इस साझेदारी को और मजबूत करने तथा आसियान की एकता एवं केंद्रीयता के समर्थन को अपनी नीति की प्रमुख प्राथमिकताओं में बनाए रखा। भारत और आसियान के बीच 40 से अधिक संवाद तंत्र कार्यरत हैं, जिनमें वाणिज्य, रक्षा, साइबर नीति, आपदा प्रबंधन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा अंतरराष्ट्रीय अपराध जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

1. राजनीतिक एवं कूटनीतिक संबंध - भारत-आसियान राजनीतिक संबंध नियमित शिखर

सम्मेलनों, मंत्रिस्तरीय बैठकों तथा विभिन्न बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से निरंतर विकसित हुए हैं। भारत आसियान क्षेत्रीय मंच, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन तथा आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस जैसे आसियान-नेतृत्व वाले तंत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। भारत इन मंचों को क्षेत्रीय शांति, स्थिरता एवं संवाद के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में देखता है। राजनीतिक स्तर पर भारत का प्रमुख दृष्टिकोण आसियान की केंद्रीयता, क्षेत्रीय संप्रभुता, नियम-आधारित व्यवस्था और समावेशी क्षेत्रीय सहयोग का समर्थन करना है। वर्ष 2025 में भारत ने स्पष्ट किया कि आसियान की केंद्रीयता और आसियान के हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण तथा भारत की हिंद-प्रशांत महासागर पहल के बीच पर्याप्त सामंजस्य है।

इस प्रकार वर्तमान राजनीतिक संबंधों की विशेषता यह है कि भारत आसियान को केवल दक्षिण-पूर्व एशिया के क्षेत्रीय संगठन के रूप में नहीं, बल्कि व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्रीय व्यवस्था के एक महत्वपूर्ण संस्थागत केंद्र के रूप में देखता है।

2. आर्थिक संबंध - आर्थिक क्षेत्र भारत-आसियान संबंधों का महत्वपूर्ण आधार है। आसियान के

आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार 2024 में भारत और आसियान के बीच कुल वस्तु व्यापार 106.93 अरब अमेरिकी डॉलर रहा, जबकि भारत से आसियान में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश लगभग 3.31 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। 2024 में भारत आसियान का आठवाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का दसवाँ प्रमुख स्रोत था। भारत-आसियान आर्थिक संबंधों का महत्वपूर्ण आधार आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौता है, जिस पर 2009 में हस्ताक्षर किए गए थे। इसके अतिरिक्त 2014 में सेवाओं के व्यापार तथा निवेश से संबंधित समझौतों ने आर्थिक संबंधों को और व्यापक बनाया। वर्तमान में दोनों पक्ष वस्तु व्यापार समझौते की समीक्षा कर रहे हैं,

जिसका उद्देश्य इसे अधिक सरल, व्यापार-अनुकूल और व्यावहारिक बनाना है। फिर भी आर्थिक संबंधों में एक महत्वपूर्ण चुनौती **व्यापार असंतुलन** है। भारत और आसियान के बीच व्यापार की मात्रा बढ़ने के बावजूद भारत के आयात अपेक्षाकृत अधिक रहे हैं। इसलिए भविष्य में आर्थिक साझेदारी की सफलता केवल व्यापार की मात्रा बढ़ाने पर नहीं, बल्कि भारतीय निर्यात, निवेश, उत्पादन एवं क्षेत्रीय आपूर्ति-श्रृंखलाओं में भारत की भागीदारी बढ़ाने पर निर्भर करेगी।

3. सामरिक एवं सुरक्षा सहयोग - भारत-आसियान सामरिक सहयोग का महत्व हिंद-प्रशांत की बदलती सुरक्षा परिस्थितियों के कारण लगातार बढ़ रहा है। समुद्री सुरक्षा, समुद्री डकैती, आतंकवाद, अंतरराष्ट्रीय अपराध, साइबर सुरक्षा तथा आपदा प्रबंधन जैसे गैर-पारंपरिक सुरक्षा विषय इस सहयोग के प्रमुख क्षेत्र हैं। भारत आसियान-नेतृत्व वाले सुरक्षा तंत्रों में सक्रिय भागीदारी के साथ समुद्री सुरक्षा एवं समुद्री क्षेत्र की जागरूकता को बढ़ाने पर भी बल देता है। 2025 में आसियान के साथ समुद्री सहयोग को और मजबूत करने पर विशेष जोर दिया गया तथा **2026 को 'आसियान-भारत समुद्री सहयोग वर्ष'** के रूप में मनाने का प्रस्ताव सामने आया।

इससे स्पष्ट है कि भारत-आसियान सुरक्षा संबंध अब पारंपरिक रक्षा सहयोग से आगे बढ़कर **समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, साइबर सुरक्षा और गैर-पारंपरिक सुरक्षा** तक विस्तृत हो रहे हैं।

हिंद-प्रशांत और चीन का प्रभाव

हिंद-प्रशांत क्षेत्र वर्तमान वैश्विक राजनीति में शक्ति-संतुलन का एक प्रमुख केंद्र बन चुका है। चीन की बढ़ती आर्थिक एवं सामरिक क्षमता, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, दक्षिण चीन सागर विवाद तथा समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा ने इस क्षेत्र की भू-राजनीतिक महत्ता को बढ़ाया है। इस परिस्थिति में भारत और आसियान के हित कई स्तरों पर समान दिखाई देते हैं। दोनों पक्ष **खुले, समावेशी, नियम-आधारित और शांतिपूर्ण हिंद-प्रशांत** के समर्थन के साथ आसियान की केंद्रीयता को महत्वपूर्ण मानते हैं। भारत की हिंद-प्रशांत महासागर पहल और आसियान के हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण में समुद्री सुरक्षा, संपर्क-सुविधा, आर्थिक सहयोग तथा नियम-आधारित व्यवस्था जैसे विषयों पर पर्याप्त समानता है। चीन इस समीकरण का महत्वपूर्ण पक्ष है। चीन आसियान का प्रमुख आर्थिक साझेदार है और दक्षिण-पूर्व एशिया में उसकी व्यापारिक एवं अवसंरचनात्मक उपस्थिति व्यापक है। दूसरी ओर, दक्षिण चीन सागर में क्षेत्रीय विवादों के कारण कई आसियान देशों की सुरक्षा चिंताएँ भी बढ़ी हैं। इसलिए आसियान की नीति चीन के साथ सहयोग और भारत सहित अन्य शक्तियों के साथ रणनीतिक संबंधों के बीच संतुलन बनाए रखने की रही है।

भारत के लिए चुनौती यह है कि वह चीन के प्रभाव का संतुलन करते हुए आसियान देशों को किसी शक्ति-प्रतिस्पर्धा के पक्ष में धकेले बिना **रणनीतिक स्वायत्तता और बहुधुवीय क्षेत्रीय व्यवस्था** को मजबूत करे। दक्षिण चीन सागर के संबंध में भारत और आसियान शांतिपूर्ण समाधान, आत्मसंयम तथा 1982 के समुद्री कानून संबंधी संयुक्त राष्ट्र अभिसमय के अनुरूप विवादों के समाधान पर बल देते हैं।

भारत-आसियान संबंधों की प्रमुख चुनौतियाँ

भारत-आसियान संबंधों में पर्याप्त प्रगति के बावजूद निम्न चुनौतियाँ अभी भी महत्वपूर्ण हैं—

- 1. व्यापार असंतुलन** - व्यापार में वृद्धि के बावजूद भारत के लिए व्यापार घाटा एक महत्वपूर्ण आर्थिक चुनौती है। इसलिए व्यापार संबंधों को अधिक संतुलित बनाना आवश्यक है।
- 2. संपर्क-सुविधा परियोजनाओं में विलंब** - भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच भौतिक संपर्क बढ़ाने के लिए म्यांमार के माध्यम से विभिन्न परियोजनाएँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन राजनीतिक अस्थिरता, सुरक्षा समस्याओं तथा प्रशासनिक एवं अवसंरचनात्मक बाधाओं के कारण इनके क्रियान्वयन में विलंब हुआ है। म्यांमार भारत और आसियान के बीच एकमात्र स्थलीय संपर्क वाला देश होने के कारण विशेष रणनीतिक महत्व रखता है।
- 3. चीन का बढ़ता प्रभाव** - दक्षिण-पूर्व एशिया में चीन की आर्थिक, अवसंरचनात्मक एवं सामरिक उपस्थिति भारत के लिए प्रतिस्पर्धात्मक चुनौती प्रस्तुत करती है। हालांकि भारत-आसियान संबंधों को केवल चीन के प्रतिरोध के रूप में विकसित करना भी उचित नहीं होगा।
- 4. क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियाँ** - दक्षिण चीन सागर, समुद्री अपराध, आतंकवाद, साइबर सुरक्षा तथा गैर-पारंपरिक सुरक्षा समस्याएँ क्षेत्रीय सहयोग को प्रभावित करती हैं।
- 5. आसियान देशों की अलग-अलग प्राथमिकताएँ** - आसियान के सदस्य देशों की राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक हित और चीन तथा अन्य प्रमुख शक्तियों के साथ संबंध अलग-अलग हैं। इसलिए भारत के लिए सभी सदस्य देशों के साथ समान रणनीति अपनाने के बजाय लचीली एवं देश-विशिष्ट कूटनीति आवश्यक है।
- 6. म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता** - म्यांमार की आंतरिक राजनीतिक स्थिति भारत-आसियान संपर्क तथा भारत की पूर्वोन्मुखी नीति के लिए विशेष चुनौती है। म्यांमार की स्थिति का प्रभाव सीमा सुरक्षा, संपर्क परियोजनाओं, व्यापार तथा मानवीय सहायता पर पड़ता है। आसियान भी म्यांमार संकट के समाधान के लिए पाँच-सूत्रीय सहमति को प्रमुख आधार मानता है।

भारत-आसियान संबंधों की भविष्य की संभावनाएँ

भारत-आसियान संबंधों का भविष्य केवल पारंपरिक व्यापार एवं कूटनीतिक सहयोग तक सीमित नहीं है। आने वाले समय में निम्न क्षेत्र विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकते हैं—

- 1. आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग** - वस्तु एवं सेवा व्यापार के विस्तार, निवेश तथा क्षेत्रीय आपूर्ति-श्रृंखलाओं में सहयोग की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। व्यापार समझौते की समीक्षा को प्रभावी बनाकर भारतीय उद्योगों की आसियान बाजारों तक पहुँच बढ़ाई जा सकती है।
- 2. संपर्क-सुविधा और पूर्वोत्तर भारत** - भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को म्यांमार एवं थाईलैंड के माध्यम से दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ना 'एक्ट ईस्ट नीति' की सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में से एक है। सफल संपर्क-सुविधा से पूर्वोत्तर भारत व्यापार, पर्यटन और निवेश का प्रवेश-द्वार बन सकता है।

3. समुद्री एवं रक्षा सहयोग - हिंद महासागर और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच समुद्री संपर्क भारत और आसियान के साझा हितों को मजबूत करता है। समुद्री सुरक्षा, समुद्री क्षेत्र की जागरूकता, आपदा राहत और समुद्री संसाधनों के संरक्षण में सहयोग की संभावनाएँ बढ़ रही हैं। 2026 को समुद्री सहयोग वर्ष के रूप में प्रस्तावित किया जाना इसी बढ़ती प्राथमिकता का संकेत है।

4. डिजिटल एवं प्रौद्योगिकी सहयोग - डिजिटल भुगतान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अर्धचालक, साइबर सुरक्षा, महत्वपूर्ण खनिज तथा नई प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में भारत और आसियान के बीच सहयोग की संभावनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। 2025 में भारत ने अर्धचालक मूल्य-श्रृंखला, महत्वपूर्ण खनिज, डिजिटल भुगतान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हरित हाइड्रोजन और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को सहयोग के उभरते क्षेत्रों के रूप में रेखांकित किया।

5. जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन - जलवायु परिवर्तन, समुद्री स्तर में वृद्धि, चक्रवात तथा प्राकृतिक आपदाओं से दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया प्रभावित हैं। इसलिए आपदा प्रबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा और जलवायु-अनुकूल विकास में सहयोग की पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

6. शिक्षा, संस्कृति एवं जन-से-जन संबंध - भारत और आसियान के बीच सभ्यतागत संबंधों को आधुनिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संपर्क से और मजबूत किया जा सकता है। 2025 में भारत ने बताया कि पिछले वर्ष 42 लाख से अधिक भारतीय पर्यटकों ने आसियान सदस्य देशों की यात्रा की, जो जन-से-जन संपर्क की बढ़ती महत्ता को दर्शाता है।

नीतिगत सुझाव

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर भारत-आसियान संबंधों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए निम्न नीतिगत उपाय महत्वपूर्ण हैं—

1. राजनीतिक संवाद को अधिक परिणामोन्मुख बनाया जाए तथा शिखर एवं मंत्रिस्तरीय बैठकों के निर्णयों के क्रियान्वयन की नियमित समीक्षा की जाए।
2. व्यापार असंतुलन कम करने पर विशेष ध्यान दिया जाए और आसियान बाजारों में भारतीय कृषि, औद्योगिक, सेवा एवं प्रौद्योगिकी उत्पादों की पहुँच बढ़ाई जाए।
3. कनेक्टिविटी परियोजनाओं को समयबद्ध किया जाए, विशेषकर भारत-म्यांमार-थाईलैंड संपर्क तथा पूर्वोत्तर भारत से संबंधित परियोजनाओं को रणनीतिक प्राथमिकता दी जाए।
4. समुद्री सुरक्षा एवं रक्षा सहयोग को मजबूत किया जाए, जिसमें समुद्री क्षेत्र की जागरूकता, संयुक्त अभ्यास, मानवीय सहायता एवं आपदा राहत तथा समुद्री अपराधों से निपटने पर विशेष ध्यान हो।
5. डिजिटल एवं तकनीकी साझेदारी को नई प्राथमिकता दी जाए, विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अर्धचालक, साइबर सुरक्षा, डिजिटल भुगतान और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में।
6. आसियान केंद्रीयता का सम्मान करते हुए भारत को हिंद-प्रशांत में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए, लेकिन भारत-आसियान संबंधों को केवल चीन-विरोधी रणनीति के रूप में प्रस्तुत करने से बचना चाहिए।

7. **म्यांमार के संदर्भ में व्यावहारिक एवं संतुलित कूटनीति** अपनाई जाए, ताकि सुरक्षा, मानवीय सहायता और भारत-आसियान संपर्क के हितों के बीच संतुलन बनाया जा सके।

दिसंबर 2025 तक की स्थिति से स्पष्ट है कि भारत-आसियान संबंध **राजनीतिक संवाद से व्यापक रणनीतिक साझेदारी** तक पहुँच चुके हैं। आर्थिक संबंधों में 2024 का **106.93 अरब अमेरिकी डॉलर का व्यापार**, 40 से अधिक संवाद तंत्र, बढ़ता समुद्री सहयोग तथा डिजिटल एवं प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्र इस साझेदारी की व्यापकता को प्रदर्शित करते हैं। फिर भी भारत-आसियान संबंधों का भविष्य केवल चीन के प्रभाव को संतुलित करने पर निर्भर नहीं है। इसकी दीर्घकालिक सफलता **आर्थिक संतुलन, प्रभावी संपर्क-सुविधा, समुद्री सुरक्षा, तकनीकी सहयोग, आसियान केंद्रीयता और साझा क्षेत्रीय हितों** को मजबूत करने पर निर्भर करेगी। यही भारत-आसियान साझेदारी को हिंद-प्रशांत की स्थिर एवं बहुध्रुवीय क्षेत्रीय व्यवस्था का प्रभावी आधार बना सकता है।

निष्कर्ष

भारत और आसियान के संबंधों का ऐतिहासिक विकास यह स्पष्ट करता है कि यह साझेदारी केवल प्राचीन सभ्यतागत एवं सांस्कृतिक संपर्कों पर आधारित संबंध नहीं है, बल्कि वर्तमान समय में यह भारत की विदेश नीति, क्षेत्रीय सुरक्षा और हिंद-प्रशांत की राजनीति का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। वर्ष 1992 में संवाद साझेदारी से प्रारंभ हुई प्रक्रिया वर्ष 2012 में रणनीतिक साझेदारी और वर्ष 2022 में व्यापक रणनीतिक साझेदारी तक पहुँची है। इस विकासक्रम से स्पष्ट होता है कि भारत-आसियान संबंधों ने राजनीतिक, आर्थिक एवं सामरिक स्तर पर निरंतर विस्तार किया है।

अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के संदर्भ में यह निष्कर्ष सामने आता है कि **भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' ने आसियान के साथ संबंधों को अधिक सक्रिय एवं बहुआयामी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।** इस नीति के माध्यम से भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ राजनीतिक संवाद, आर्थिक सहयोग, संपर्क-सुविधा, रक्षा एवं समुद्री सहयोग तथा जन-से-जन संपर्क को प्राथमिकता दी है। अतः पहली परिकल्पना H1 व्यापक रूप से पुष्ट होती है कि 'एक्ट ईस्ट नीति' ने भारत-आसियान राजनीतिक एवं सामरिक संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

दूसरे उद्देश्य एवं शोध प्रश्न के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि **हिंद-प्रशांत की बदलती भू-राजनीति और चीन के बढ़ते आर्थिक एवं सामरिक प्रभाव ने भारत-आसियान संबंधों को नई रणनीतिक प्रासंगिकता प्रदान की है।** दक्षिण चीन सागर, समुद्री संचार मार्गों की सुरक्षा, क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन तथा अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा ने भारत और आसियान के सामने नई सुरक्षा परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं। हालांकि भारत और आसियान का सहयोग केवल चीन के प्रभाव को संतुलित करने तक सीमित नहीं है, फिर भी चीन की बढ़ती क्षेत्रीय भूमिका ने समुद्री सुरक्षा, रक्षा सहयोग और नियम-आधारित क्षेत्रीय व्यवस्था के प्रति दोनों पक्षों की रुचि को बढ़ाया है। इस आधार पर दूसरी परिकल्पना H2 भी पर्याप्त रूप से पुष्ट होती है।

आर्थिक क्षेत्र में भारत-आसियान संबंधों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। वर्ष 2024 में दोनों पक्षों के बीच वस्तु व्यापार लगभग **106.93 अरब अमेरिकी डॉलर** रहा। इसके बावजूद व्यापार असंतुलन, बाजार पहुँच तथा गैर-शुल्क बाधाएँ अभी भी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारत-आसियान आर्थिक संबंधों में पर्याप्त क्षमता मौजूद है, किंतु इस क्षमता को वास्तविक परिणामों में बदलने के लिए व्यापारिक संबंधों को अधिक संतुलित एवं पारस्परिक रूप से लाभकारी बनाना आवश्यक है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि कनेक्टिविटी भारत-आसियान संबंधों की सफलता का महत्वपूर्ण आधार है। भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग तथा अन्य संपर्क परियोजनाएँ भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। किंतु म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता, सुरक्षा संबंधी समस्याओं और परियोजनाओं के क्रियान्वयन में विलंब ने इस क्षेत्र में भारत की संभावनाओं को प्रभावित किया है। इसलिए भविष्य में केवल परियोजनाओं की घोषणा पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि उनके समयबद्ध और प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक होगा।

तीसरी परिकल्पना H3 के संदर्भ में अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कनेक्टिविटी, आर्थिक सहयोग और समुद्री सुरक्षा वास्तव में भारत-आसियान संबंधों के भविष्य के प्रमुख आधार बन सकते हैं। इसके साथ डिजिटल अर्थव्यवस्था, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, हरित प्रौद्योगिकी, आपदा प्रबंधन तथा शिक्षा एवं सांस्कृतिक संपर्क जैसे नए क्षेत्र भी साझेदारी को अधिक व्यापक बना सकते हैं।

समग्र रूप से अध्ययन यह दर्शाता है कि भारत-आसियान संबंधों की सबसे बड़ी शक्ति दोनों पक्षों के साझा हितों और क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता में निहित है। भारत के लिए आसियान दक्षिण-पूर्व एशिया तक आर्थिक एवं सामरिक पहुँच का माध्यम होने के साथ-साथ हिंद-प्रशांत में एक महत्वपूर्ण साझेदार है, जबकि आसियान के लिए भारत एक ऐसी उभरती शक्ति है जिसके साथ आर्थिक, समुद्री, तकनीकी और सामरिक सहयोग क्षेत्रीय संतुलन को मजबूत कर सकता है। हालाँकि, भारत-आसियान संबंधों को केवल चीन के विरुद्ध शक्ति-संतुलन की रणनीति के रूप में देखना उचित नहीं होगा। आसियान की केंद्रीयता, सदस्य देशों की रणनीतिक स्वायत्तता और उनकी विभिन्न आर्थिक एवं राजनीतिक प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए भारत को एक ऐसी नीति अपनानी होगी जो प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ सहयोग और समावेशिता पर भी आधारित हो।

अतः प्रस्तुत शोध का अंतिम निष्कर्ष यह है कि भारत-आसियान संबंध एक संभावनाशील लेकिन चुनौतियों से युक्त व्यापक रणनीतिक साझेदारी है। यदि भारत व्यापार असंतुलन को कम करने, संपर्क-सुविधा परियोजनाओं को समयबद्ध रूप से पूरा करने, समुद्री एवं रक्षा सहयोग को मजबूत करने तथा डिजिटल एवं तकनीकी क्षेत्रों में नई साझेदारियाँ विकसित करने में सफल होता है, तो भारत-आसियान संबंध न केवल दोनों पक्षों के राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ा सकते हैं, बल्कि एक स्वतंत्र, समावेशी, बहुधुवीय एवं नियम-आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्रीय व्यवस्था के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. सेंट-मेज़ार्ड, आई. डी. (2016). *भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया: आसियान के साथ भारत की रणनीतिक भागीदारी की दिशा*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. पालित, ए. (2016). *भारत की एक्ट ईस्ट नीति और दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए इसके निहितार्थ*. दक्षिण-पूर्व एशियाई मामलों पर अध्ययन संस्थान।
3. सुंदररमन, एस. (2017). *भारत-आसियान संबंध: हिंद-प्रशांत में 'एक्ट ईस्ट' की दिशा*. अंतरराष्ट्रीय अध्ययन।
4. नगीबैकचिंग एवं पांडे, ए. (2020). *भारत की एक्ट ईस्ट नीति और आसियान: हिंद-प्रशांत में साझेदारी के माध्यम से क्षेत्रीय व्यवस्था का निर्माण*. अंतरराष्ट्रीय अध्ययन।

5. ओग्डेन, सी. (2023). *भारत-आसियान संबंध: मानदंड-आधारित दृष्टिकोण की उपयोगिता एवं सीमाएँ*. अंतरराष्ट्रीय अध्ययन।
6. बनिक, एन., एवं किम, एम. (2020). *भारत-आसियान व्यापार संबंध: प्रवृत्तियों का परीक्षण एवं संभावनाओं की पहचान*. विज्ञान: द जर्नल ऑफ बिज़नेस पर्सपेक्टिव।
7. घोष, डी. (2024). *भारत-आसियान आर्थिक संबंध एवं पूर्वोत्तर भारत: एक ईस्ट नीति का नया प्रतिमान*. भारतीय अर्थशास्त्र एवं विकास पत्रिका।
8. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, (2024). *भारत-प्रशांत*. भारत सरकार।
9. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, (2025). *भारत-आसियान संबंध*. भारत सरकार।
10. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, (2025). *एक ईस्ट नीति*. भारत सरकार।
11. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, (2025). *भारत की हिंद-प्रशांत महासागर पहल*. भारत सरकार।
12. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, (2025). *भारत-आसियान संबंध: विदेश मंत्रालय के आधिकारिक दस्तावेज एवं वक्तव्य*. भारत सरकार।
13. दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ, (2024). *आसियान-भारत संवाद संबंधों का अवलोकन*. आसियान सचिवालय।
14. दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ, (2025). *आसियान-भारत संवाद संबंधों का अवलोकन: अक्टूबर 2025 तक*. आसियान सचिवालय।
15. दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ, (2025). *आसियान आर्थिक मंत्रियों-भारत परामर्श का संयुक्त मीडिया वक्तव्य, 26 सितंबर 2025*. आसियान सचिवालय।
16. दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ, (2025). *आसियान-भारत व्यापक रणनीतिक साझेदारी से संबंधित आधिकारिक दस्तावेज*. आसियान सचिवालय।



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMS.T.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE